3. मात्रा ज्ञान

उचित मात्रा ज्ञान भाषा के शुद्ध लेखन और उच्चारण का परिचायक होता है। हिंदी भाषा उच्चारण पर आधारित होती है अर्थात् यह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। अतः मात्राओं का भली-भाँति ज्ञान होना प्रत्येक बच्चे के लिए प्रारंभिक शिक्षा से ही आवश्यक माना गया है।

- ❖ बच्चे पिछली कक्षाओं में मात्राओं के बारे में पढ़ चुके हैं तथा उन्हें लगाना भी सीख गए हैं। फिर भी पुनरावृत्ति सदैव आवश्यक होती है।
- ❖ बच्चों को बताएँ, मात्राएँ स्वरों की होती हैं जो व्यंजनों पर लगाई जाती हैं।
  केवल 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती पर वह प्रत्येक व्यंजन में सम्मिलित होता है। अ स्वर के बिना व्यंजन आधे लिखे तथा बोले जाते हैं, जैसे– क् (चक्की), म् (अम्मा) आदि।
- ❖ अन्य स्वर व्यंजनों के साथ अपने मात्रा रूप में लगाए जाते हैं। उदाहरण की सहायता से ब्लैकबोर्ड पर लिखकर समझाएँ। जैसे– म् + आ + ल् + ई = माली, च् + ऊ + ह् + आ = चूहा आदि।
- ❖ सभी मात्राओं को वर्णों पर लगाकर दिखाएँ।
- ❖ प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दें।
- ❖ इ-ई (ि ी) तथा उ-ऊ (ु ू) की मात्राओं का उच्चारण अंतर स्पष्ट रूप से समझाएँ। छोटी इ, बड़ी ई या छोटा उ, बड़ा ऊ द्वारा मात्रा भेद सिखाना अशुद्ध है। ऐसा न करें। बल्कि इ तथा उ की मात्रा का उच्चारण लघु तथा ई-ऊ की मात्रा का उच्चारण दीर्घ रूप में करते हुए अंतर स्पष्ट करें।
- ❖ ऋ की मात्रा (ृ) वर्ण के नीचे लगाई जाती है। बताएँ कि इसका उच्चारण रि की तरह होता है। सभी बच्चों से गृह, कृषि, कृषक, मृग आदि शब्दों का कई बार उच्चारण करवाएँ।
- ❖ ह में ऋ की मात्रा ह के अंदर की ओर लगती है– हृदय समझाएँ।
- ❖ र में उ-ऊ की मात्रा भिन्न रूप से लगती है, बताएँ। उ-ऊ की मात्रा र के मध्य में लगाई जाती है– रूप, रुपया आदि द्वारा समझाएँ।
- ❖ 'र' के रूपों का प्रयोग बताएँ। समझाएँ, स्वर सहित 'र' यदि स्वर रहित किसी व्यंजन के साथ प्रयोग हो तो वह पदेन रूप में वर्ण के नीचे लगाया जाता है। इस प्रकार द् + र = द्र ट् + र = ट्र प् + र = प्र आदि।
  इसी प्रकार यदि स्वर रहित 'र' किसी स्वर सहित व्यंजन के साथ आए तो वह उसके ऊपर लिखा जाता है।
  र् + क = र्क। र के रूपों का बार-बार अभ्यास करवाएँ।
- ❖ अभ्यास करवाने में यथासंभव सहयोग करें।